# राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में प्रेमचंद की कहानियों का विश्लेषण

**डॉ. कंचन सिंह**

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

हिन्दी विभाग

दयानंद आर्य कन्या डिग्री कॉलेज

मुरादाबाद (उ.प्र.)

प्रेमचंद एक कालजयी कहानीकार थे। उनकी कहानियां राष्ट्रीय समस्याओं से संपृक्त हैं। वे समाज में स्वस्थ परंपरा एवं मानवतावादी विचार के पक्षपाती थे। उनके स्वराज्य का अर्थ है कि हमारे देश में पूँजीपतियों या अंग्रेजी हुकूमतों द्वारा आम जनता पर जो अमानुषिक अत्याचार होते हैं ,उनमें आमूलचूल परिवर्तन हो , उनका शोषण बंद हो ,उन्हें विदेशी दासतां व समाजिक रुढ़ियों से मुक्ति मिले। प्रेमचंद के हृदय में विदेशी शासन व्यवस्था से मुक्ति पाने की तीव्र आकांक्षा आरंभ से ही विद्यमान थी, किन्तु आगे चलकर अपने समाज के लोगों में व्याप्त कमियों पर अधिक रही। वे निरंतर समाज में व्याप्त विसंगतियों और विषमताओं पर लिखते रहे और एक समतामूलक राष्ट्र की कल्पना करते रहे। ''राष्ट्रवाद चाहे और कोई उपकार न कर सके ,देश में खून खच्चर तो नहीं कराता , कुछ लोगों को एकत्र तो करता है जो राष्ट्र को संप्रदाय से ऊपर समझते हैं। वही बुनियाद है जिसपर राष्ट्र का भवन खड़ा होता है ।जब तक राष्ट्र के भिन्न– भिन्न अंग एक दूसरे के अहितपर अपना हित निर्माण करते रहेंगे, राष्ट्र का पतन होता चला जाएगा।''(1)

प्रेमचंद एक हरदिल अजीज साहित्यकार हैं। उन्हें कथा सम्राट के नाम से नवाजा गया। उनका साहित्य समाज के समसामायिक समस्याओं को पूर्णरुपेण अभिव्यक्ति देने में समर्थ है । उन्होंने लगभग तीन सौ से अधिक कहानियां लिखीं, जो तत्कालीन जनमानस की समस्याओं से जुड़ी हुई हैं । प्रेमचंद ग्रामीण जीवन से अधिक सम्बद्ध थे ,अतः उनकी अधिकतर कहानियों का विषय गांव के जीवन से निःसृत है, इसके अतिरिक्त उनकी कहानियों में कस्बाई जीवन ,सत्याग्रह आंदोलन, जमींदारों साहूकारों, क्लर्कों एवं उच्च पदाधिकारियों की समस्याओं के साथ–साथ राष्ट्रीय चेतना विशेष रूप से मुखरित हुई।

डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं –''प्रेमचन्द का हृदय संकुचित राष्ट्रवाद से ऊपर था। वे जानते थे कि इंसाफ और नई जिंदगी के लिए तमाम दुनियां की आम जनता जो लड़ाई लड़ रही है, हिंदुस्तान का स्वाधीनता आंदोलन उसी का हिस्सा है। वे हिंदुस्तान के लोगों में एक नया भाव देख रहे थे कि दुनियां के तमाम मेहनत करने वाले लोग भाई–भाई हैं।''(2) प्रेमचंद की आरंभिक रचनाएं उर्दू में लिखी गईं हैं जैसे उपन्यासों में ''जलवाए ईसार'',''हम खुर्मा हम सवाब'',''बाजारे हुस्न'' इत्यादि। उर्दू में लिखा गया उनका पहला कहानी संग्रह '' सोजे वतन'' नाम से प्रकाशित हुआ था। इस संग्रह में कुल पाँच कहानियां –''दुनिया का सबसे अनमोल रतन'', ''शेख मखमूर'', ''यही मेरा वतन है'',''शोक का पुरस्कार'','' सांसारिक प्रेम और देशप्रेम'' संग्रहित हैं। इन कहानियों ने जनमानस के हृदय में राष्ट्रीय भावना जागृत करने में अपनी विशेष भूमिका निभाई। अंग्रेजों ने इस कहानी संग्रह की पाँच सौ प्रतियां प्रेमचंद के ही सामने जलवा दी। इन्हें नवाबराय नाम भी छोड़ना पड़ा, लिहाजा आगे ये प्रेमचन्द के नाम से लिखने लगे।

''सोजे वतन'' की पहली कहानी है ''दुनियां का सबसे अनमोल रतन''। इस कहानी में एक वीर सैनिक की वीरता को उद्घाटित किया गया है ,जो मातृभूमि की रक्षा करने के लिए अपने प्राणों की आहुति देने में ही परम संतुष्टि महसूस करता है। उसके रक्तरंजित शरीर से निकलती रक्त की बूंदे ही दुनियां का सबसे अनमोल रतन हैं। प्रेमिका द्वारा मंगाई गई रत्नजड़ित मंजूषा से निकली तख्ती पर स्वर्णाक्षरों में लिखा है –'' खून का वह आखिरी कतरा जो वतन की हिफाजत में गिरे , दुनियां की सबसे अनमोल चीज है.। (3)'' ''शेख मखमूर'' कहानी का पात्र मसऊद एक ऐसा सिपाही है जो अपने एकनिष्ठ व कठिन प्रयासों से देश को आजाद करने में सफल होता है, अन्य लोगों के लिए प्रेरणा बनता है जिससे उनमें भी देशभक्ति की भावना का संचार होता है। ''मेरा वतन'' कहानी एक प्रवासी व्यक्ति का अपने देश के प्रति प्रेम दर्शाया गया है। एक लम्बा समय विदेश में रहने के बाद भी अपनी पुरानी यादों के साथ अपने वतन को भी याद करते हैं। अपनी मातृभूमि पर वापस आकर उन्हें बहुत परिवर्तन दिखाई देता है पर उनका प्रेम किंचित मात्र भी कम नहीं होता।उन्हें जो आत्मिक संतुष्टि अपने देश में आकर मिली वह वर्षों विदेश में रहने के पश्चात् भी नहीं महसूस हुई।'' सांसारिक प्रेम और देश प्रेम'' कहानी मुख्य पात्र मैजिनी अपने देश से अत्यंत प्रेम करता है। मैग्डलीन एक खूबसूरत महिला है जो मैजिनी से बहुत प्रेम करती है। मैजिनी चाहता है कि वो किसी और से विवाह करके सुखी जीवन व्यतीत करे किंतु मैंडलिन का प्रेम उसके प्रति और बढ़ जाता है। मैजिनी देश प्रेम के लिए अपने प्रेम को स्वीकार नहीं किया। उसने वयक्तिगत प्रेम को देश प्रेम

पर न्यौछावर कर दिया । प्रेमचंद अपनी लेखनी के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन में एक बड़ी भूमिका अदा कर रहे थे। ''सोजे वतन'' उसकी पहली कड़ी थी । पराधीनता की बेड़ियों में जकड़े जनमानस तक अपनी बात पहुँचाना ,उन्हें एकत्र व संगठित करना , उनमें अपने राष्ट्र के लिए राष्ट्र भक्ति पैदा करना अत्यधिक चुनौतीपूर्ण कार्य था। प्रेमचन्द जी की कहानियों से प्रेरित होकर लोग क्रांति पथ पर आगे बढ़ते गए,इस क्रांति की ज्वाला में न जाने कितने वीरों ने अपने प्राणों की भी परवाह न की और देश की गुलामी की जंजीरों को तोड़ने में अपनी महती भूमिका अदा की।

''राजा हरदौल'' ,''आल्हा'', ''सारंधा'' एवं विक्रमादित्य जैसी ऐतिहासिक कहानियां बुंदेली वीरता से प्रभावित होकर प्रेमचंद ने लिखीं। इन कहानियों के पात्र मान स्वाभिमान के लिए जीते मरते हैं। ऐसी कहानियों के सृजन का एक मात्र मकसद था देश के लोगों में देश प्रेम ,मानव वीरत्व का संचार करना। उनकी कहानियां देश पर मर मिटने का आह्वान करती हैं । प्रेमचंद के राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित कहानियों में ''लालफीता'' व ''जुलूस'' जैसी कहानियां आती हैं। ''लालफीता'' कहानी का नायक हरिविलास जो कि मजिस्ट्रेट है। वह इमानदार व न्याय प्रिय व्यक्ति है। उसका विचार है कि सरकार जब तक अपने धर्म व आत्मा के विरुद्ध आचरण करने को विवश न कर दे , तब तक सरकारी नौकरी को गुलामी नहीं कहा जा सकता लेकिन सरकारी नौकरी गुलामी के अतिरिक्त कुछ नहीं है। इसका संकेत उसे लालफीते से बधा हुआ एक गुप्त निर्देश पत्र पाकर हो जाता है, जिसमें उसे असहयोगियों का दमन करने की आज्ञा दी जाती है। वह स्वयं अपनी आत्मा का गला घोटने के लिए अपने को तैयार नहीं कर पाता। आर्थिक कठिनाइयों के होते हुए भी वह बीस वर्ष की सरकारी नौकरी से त्याग पत्र दे देता है। वह ब्रिटिश सरकार की अनीति के प्रति असहयोग प्रदर्शित करता है। विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर वह स्वदेशी पहनावे पर बल देता है। उसके पुत्र शिवविलास का मत है कि ''इस चर्खे पर तो सब कुछ निर्भर है। यदि तीस करोड़ की आबादी में केवल पचास लाख मनुष्य यह काम करने लगें तो हमारे देश को अस्सी करोड़ रुपए की वार्षिक बचत हो जाएगी। यदि एक करोड़ आदमी इस धंधे में लग जाएं तो हमें कपड़े के लिए अन्य देश को पैसा भी न देना पड़े।''(4) देश की राष्ट्रीय चेतना से उद्‌बुद्ध होकर हरिविलास का बड़ा पुत्र शिवविलास कॉलेज से अपना नाम कटवा लेता है। उसके अंदर देश हित के लिए स्वावलंबन और आत्मविश्वास की भावना भरी हुई है , वह कॉलेज छोड़ने के बाद एक समाचार पत्र निकालना चाहता है। उसका उद्देश्य अपने पत्र के माध्यम से विवेकशील जीवन का प्रचार करना है ।

सन् 1921 में असहयोग माला में ''स्वराज्य के फायदे'' शीर्षक से प्रेमचंद जी का एक लेख प्रकाशित हुआ था, जिसमें उन्होंने इसके दो साधन बताए हैं – पहला स्वावलम्बन और दूसरा उन व्यवस्थाओं का त्याग जो हमारी आत्मा को पराधीन बनाती हैं। वे कहते हैं –''स्वराज्य से देश को सबसे बड़ा जो फायदा होगा वह भारतीय जीवन का पुनुरुद्धार है। प्रत्येक जाति के जीवन मे कोई प्रधान गुण होता है ।अंग्रेज जाति का प्रधान गुण पराक्रम है, फ्रांसीसियों का प्रधान गुण स्वतंत्र प्रेम है, उसी भांति भारत का प्रधान गुण धर्म परायणता है। हमारे जीवन का मुख्य आधार धर्म था। हमारा जीवन धर्म के सूत्र में बधा हुआ था। लेकिन पश्चिमी विचारों के असर से हमारे धर्म का सर्वनाश हुआ जाता है ...हम अपनी विद्या भूलते जाते हैं, अपने रहन –सहन रीति–रिवाज से विमुख होते जाते हैं ,हमारा अद्वितीय सामाजिक संगठन छिन्न–भिन्न हुआ जाता है। पश्चिम की देखादेखी हम धनोपार्जन को ही जीवन का लक्ष्य मानने लगे हैं।''(5)

1929 में कांग्रेस पूर्ण स्वराज्य की घोषणा कर चुकी थी, देश में प्रत्येक जगह स्वराज्य दिवस मनाया जा रहा था, प्रेमचन्द ने इसको ''जुलूस'' कहानी में व्यंजित किया है। ''देश के युवक वृद्ध व बालक हाथों में तिरंगा लिए जुलूस में सम्मिलित होते हैं। देश में कुछ ऐसे भी लोग हैं जो इनकी आलोचना करते हैं , लेकिन जुलूस वंदेमातरम गाता हुआ स्वाधीनता के नशे में चूर चौराहे पर पहुँचता है, जिसे दरोगा बीरबल सिंह और उसके सिपाही रोक देते हैं और अंग्रेजी हुकूमत का हिमायती दरोगा बीरबल सिंह जुलूस का दमन करता है। परिणाम स्वरूप वृद्ध नेता इब्राहिम दरोगा के घोड़ों के टापों के नीचे कुचला जाता है । इसकी सूचना पाते ही शहर से हजारों आदमियों का जत्था घटना स्थल की तरफ चल देता है। कुछ देर पहले जो लोग आलोचना कर रहे थे वे भी समूह में सम्मिलित होते हैं ।''(6)

परिस्थिति की भयावहता का आकलन कर जुलूस को वापस लौटा दिया जाता है, लेकिन वास्तव में उन्होंने एक युगांतरकारी विजय प्राप्त की थी। उनकी विजय का ज्वलंत प्रतीक यह था कि उन्होंने जनता की सहानुभूति प्राप्त कर ली थी। ''पति और पत्नी'' एक ऐसे दंपति की कहानी है, जिसमें पति सरकारी अफसर और पत्नी राष्ट्र भक्त है। सत्याग्रह आंदोलन के समय विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जा रही थी। गोदावरी अपने पति की आज्ञा का उलंघन कर स्वाधीनता आंदोलन की सभा में शामिल हो जाती है।''जेल'' की मृदुला तो अपनी गिरफ्तारी भी देती है। ''समरयात्रा'' कहानी में स्वाधीनता आंदोलन की जागृति गांव तक दिखाई देती है। ''अधिकार चिंता'' कहानी में प्रेमचंद ने प्रतीकों के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार की कथा कही है। इनकी एक कहानी है ''स्वत्वरक्षा''। इसमें एक अड़ियल घोड़े के माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि व्यक्ति को अपना ईमान किसी भी लालसा में आकर नहीं बेचना चाहिए। इस कहानी में घोडे की रविवार को छुट्टी रहती है, किन्तु जब इस दिन भी उसे काम पर लगाया जाता है तो यह अपने स्वत्व की रक्षा के लिए काम करने से इंकार कर देता है उसे शराब व दाने का लालच

दिया जाता है ,दंडित भी किया जाता है फिर भी यहअपने बुनियादी अधिकारों को बेचना नहीं चाहता। यह एक प्रतीकात्मक कहानी है। ''होली का उपहार'' एक नवविवाहिता आजादी की लड़ाई में निर्भीक भाव से हिस्सा लेती है एवं युवकों का नेतृत्व भी करती है। अपने पति को भी इस लड़ाई में शामिल होने के लिए प्रेरित करती है। ''सती'' कहानी सतही तौर पर ऐतिहासिक कहानी प्रतीत होती है पर इसके केंद्र में राष्ट्र की स्वाधीनता ही है । इसमें एक हिम्मती बुंदेली बालिका का वर्णन है जो देश की आजादी को ही अपने जीवन का लक्ष्य समझती है और अपने जीवन को भी न्यौछावर कर देती है। डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं–'' प्रेमचंद की आवाज सुनकर हमें अपने देश व जनता पर गर्व होता है ,उस जातीय संस्कृति पर गर्व होता है, जिसे प्रेमचन्द संवार रहे थे। प्रेमचंद की आवाज उस समय उठी थी जब पहले महायुद्ध में मानवध्वंसी तोपों की गड़गड़ाहट हवा में गूँज रही थी। आज भी जब विश्व में तीसरे युद्ध के बादल छाए हुए हैं ,उस स्वाधीनता संग्राम के सैनिक की वाणी विश्वशांति की रक्षा के लिए जनता का आह्वान करती है । प्रेमचंद की आवाज भारत की अजेय जनता की आवाज है। इसलिए प्रेमचंद आज भी हमारे साथ हैं।''(7)

उनके हृदय में अपने देश की आजादी की आग निरंतर धधकती रही और इसके लिए वे अपनी लेखनी को शस्त्र की भांति सफल प्रयोग करते रहे। 3 जनवरी सन् 1932 को बनारसीदास चतुर्वेदी के नाम खत में लिखते हैं–'' मेरी आकांक्षाएं कुछ नहीं हैं । इस समय तो सबसे बड़ी आकांक्षा यह है कि स्वराज्य संग्राम में विजयी हों। धन या यश की लालसा मुझे नहीं रही। खाने भर को मिल ही जाता है। मोटर और बंगले की मुझे हविश नहीं। हाँ यह जरूर चाहता हूँ कि दो चार ऊँची कोटि की पुस्तकें लिखूं पर उनका उद्देश्य भी स्वराज्य–विजय ही है।''(8)

प्रेमचंद राष्ट्रीयता के विकास में जातिगत भेदभाव को बड़ी रुकावट मानते थे। इसीलिए वे कहते हैं –''राष्ट्रीयता की पहली शर्त वर्णव्यवस्था, ऊँच–नीच का भेद और धार्मिक पाखण्ड का जड़ खोदना है।'' (9) प्रेमचंद ने तत्कालीन विदेशी नीतियों के विरुद्ध एक आजादी की लड़ाई का मानचित्र तैयार किया और उसमें शामिल सभी वर्ग के लोगों की भलाई का ध्यान भी रखा। उन्होंने तत्कालीन विदेशी नीतियों के विरुद्ध एक आजादी की लड़ाई का मानचित्र तैयार किया और उसमें शामिल सभी वर्ग के लोगों की भलाई का ध्यान भी रखा, वे जानते थे कि मजदूर ,किसान, मध्यवर्ग व अन्य सभी अपने सरोकारों से ही राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े हैं इसीलिए उनकी रचनाओं में इसकी विशद व्याख्या परिलक्षित होती है। प्रेमचंद कहते हैं ''असहयोग स्वराज्य के लिए है। स्वराज्य अर्थात् किसान मजदूर जनता का राज।'' दरअसल वे एक ऐसे भारत का स्वप्न देख रहे थे जहाँ मनुष्य मनुष्य में भेद न हो। कोई भी किसी का शोषण न कर सके। उनके अनुसार इसे कोई भी नाम दिया जा सकता है ''वह नाम शायद सब ठीक होंगे और सब उतने ही गलत। नाम के फेर में क्यों पड़ते हो , वह तो छिलका है। छीलकर देखो , अंदर क्या है। हाँ अगर नाम के बिना तुम्हारा काम नहीं चलता तो, लो मैं दो नाम देता हूँ–जनतावाद , लोकवाद। जनतंत्र नहीं, उसमें तो धोखा है। सभी अपने को जनतंत्र कहते हैं , लेकिन जनता उसमें कहाँ है। लेकिन चीज को नाम दे देना ही काफी नहीं है ,उसका बिरवा लोगों के दिल में रोपना होगा।''(10)

उपरोक्त संदर्भ के आलोक में कथा– सम्राट मुंशी प्रेमचंद यह दिखाना चाहते हैं कि हमारे देश में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ भारत की आम जनता की स्वाधीनता पाने की सहानुभूति साथ – साथ ,जो राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा की जागृति है। इस अर्थ में यह स्पष्ट है कि प्रेमचंद के कथा–साहित्य में राष्ट्रीय चेतन के स्वर मुखर हुए हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1– जागरण ,30 अक्टूबर,1933

2– डॉ. रामविलास शर्मा, प्रेमचन्द और उनका युग, राजकमल प्रकाशन दिल्ली पृ. 47

3– दुनिया का सबसे अनमोल रतन, गुप्त धन ,भाग 1,पृ. 91

4– लालफीता ,प्रेम चतुर्थी, पृ.60

5– स्वराज्य के फायदे , विविध प्रसंग, भाग 2, पृ. 273

6– जुलूस , मानसरोवर भाग–7,पृ.53

7– डॉ. रामविलास शर्मा, प्रेमचन्द और उनका युग, पृ .158

8– चिठ्ठी पत्री ,भाग –2, पृ. 77

9– अमृतराय, विविध प्रसंग ,2 हंस प्रकाशन, इलाहाबाद पृ.264

10– कलम का सिपाही, अमृतराय, पृ.291